ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

आज़ाद हिंद फौज का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

चंद्रपाल जांदू

इतिहास, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

कदम कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा
ये जिंदगी है क़ौम की, तू क़ौम पे लुटाये जा
तू शेर-ए-हिन्द आगे बढ़, मरने से तू कभी न डर
उड़ा के दुश्मनों का सर, जोश-ए-वतन बढ़ाये जा.....

ये कुछ पंक्तियां हैं, उस गीत की जिसे भारतीय राष्ट्रीय सेना (भा. रा. से.) या आज़ाद हिन्द फौज की रगों में जोश भरने के लिए गाया जाता था। आज़ाद हिन्द फौज बनायी तो गयी थी भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए किंतु इसका जन्म हुआ विदेशी भूमि अर्थात जापान में। इसका गठन भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 में किया गया। भारतीय राष्ट्रीय सेना मोहन सिंह के दिमाग की उपज थी, जिसे रासबिहारी बोस ने एक स्वरूप प्रदान किया। इन्होंने जापानियों के प्रभाव और सहायता से दक्षिण-पूर्वी एशिया से जापान द्वारा एकत्रित क़रीब 40,000 भारतीय स्त्री-पुरुषों को सेना का प्रशिक्षण दिया तथा उसे नाम दिया 'आज़ाद हिन्द फ़ौज'।

परिचय

गठन	1942 में
सैन्य बल	43,000
सक्रियता	अगस्त 1942 - सितंबर 1945
गठनकर्ता	भारतीय राष्ट्रवादी
गठनस्थल	दक्षिण पूर्व एशिया
प्रथम गठनकर्ता	मोहन सिंह
पुनर्गठन	सुभाष चंद्र बोस

इस सेना में 'मलायन अभियान' (8 दिसंबर 1941 - 31 जनवरी 1942) और 'सिंगापुर की लड़ाई' (8 से 15 फरवरी 1942) के दौरान जापान द्वारा ब्रिटिश-भारतीय सेना के कब्जे में लाये गए भारतीय सैनिक शामिल थे। दिसंबर 1942 में, एशिया में जापान की युद्ध में भूमिका को लेकर जापानी सेना और भा. रा. से. का नेतृत्व करने वाले सदस्यों के मध्य मतभेद छिड़ गया, जिस कारण इस सेना को भंग कर दिया गया। तत्पश्चात दक्षिण-पूर्व एशिया में आगमन हुआ भारत के महानायक सुभाष चन्द्र बोस का। सुभाष चन्द्र बोस का जन्म सन 1897 में आज ही के दिन (23 जनवरी) कटक में हुआ था। इनके नेतृत्व से प्रभावित होकर रासबिहारी बोस जी ने भा. रा. से. की कमान सुभाष चन्द्र बोस जी के हाथों सौंप (1943 में) दी। सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में इसे पुनर्जीवित किया गया था। सेना को बोस की अर्ज़ी हुकुमत-ए-आज़ाद हिंद (स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार) की सेना कहा गया। इसी दौरान सुभाष चन्द्र बोस ने अपना अमर नारा 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' दिया। सुभाष चन्द्र बोस के आह्वान पर लोग बड़ी संख्या में सेना में शामिल होने लगे। बोस के नेतृत्व में, सेना ने मलाया (वर्तमान मलेशिया) और बर्मा में भारतीय प्रवासी आबादी के पूर्व कैदियों और हजारों नागरिक स्वयंसेवकों को आकर्षित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी सेना के आंकड़े 40,000 तक पहुंच गये।

इस दूसरी भा. रा. से. ने शाही जापानी सेना के साथ इम्फाल में और बर्मा के अभियानों में ब्रिटिश और राष्ट्रमंडल सेना के विरूद्ध लड़ाई लड़ी और बाद में मित्र राष्ट्रों के सफल बर्मा अभियान के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी। सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में, स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार ने अंग्रेजों और अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। बोस ने मणिपुर में जापानियों के ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आक्रमण में भा. रा. से. को एक अभिन्न अंग बनाने के लिए जापानियों को आश्वस्त किया। यू-गो (U-Go) आक्रमण में, जो

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

मणिपुर और नागा पहाड़ियों से ब्रिटिश कब्जा हटाने के उद्देश्य से एक सैन्य अभियान था, भारतीय सेना ने एक प्रमुख भूमिका निभाई। हालांकि, भा. रा. से. को बड़ी संख्या में अपने सैनिकों को खोना पड़ा, जिस कारण सेना काफी कमजोर पड़ गयी। 1945 में, भा. रा. से. 'बर्मा अभियान' के दौरान जापानी तैनाती का हिस्सा रही, जो बर्मा के ब्रिटिश उपनिवेश में हुई लड़ाई की एक श्रृंखला थी। दुर्भाग्य से, भा. रा. से. के सैनिकों और जापानी सेना को ब्रिटिश सेनाओं द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया, जिससे कई लोगों को आत्मसमर्पण या पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। भा. रा. से. के पास सुरक्षा से पीछे हटने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था।[1,2]

विचार-विमर्श

साथ ही जापानियों ने बर्मा में अपनी चढ़ाई को भी वापस ले लिया था तथा शेष बचे भारतीय राष्ट्रीय सेना के जवानों ने बैंकॉक की ओर पैदल मार्च शुरू किया। जापानी सैनिकों द्वारा उन्हें परिवहन उपलब्ध कराने के बावजूद भी, बोस द्वारा मना कर दिया गया और वे अपने सैनिकों के साथ चले गए। वापस आने के दौरान इनकी सेना को मित्र राष्ट्र के हवाई हमलों और बर्मा तथा चीनी सैनिकों के विरोध का सामना करना पड़ा। बोस अगस्त 1945 तक भारतीय राष्ट्रीय सेना और आज़ाद हिन्द से जुड़े रहे। अगस्त 1945 में, सुभाष चंद्र बोस ने सोवियत सैनिकों से संपर्क करने हेतु डालियान के लिए प्रस्थान किया। लेकिन बाद में यह बताया गया कि बोस जिस विमान में यात्रा कर रहे थे, वह ताइवान के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें उनकी मृत्यु हो गयी।[3,4]

भारतीय राष्ट्रीय सेना के कुल 16,000 सैनिकों को विभिन्न स्थानों से अंग्रेजों द्वारा पकड़ लिया गया था। नवंबर 1945 तक, लगभग 12,000 भा. रा. से. के सैनिकों को चटगांव और कलकत्ता में पारगमन शिविरों में रखा गया था। नवंबर 1945 में, यह बताया गया कि अंग्रेजों ने कई भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिकों को मार डाला, जिसके कारण पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक संघर्ष हुआ।आज़ाद हिन्द फौज बनायी तो गयी थी भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए किंतु इसका जन्म हुआ विदेशी भूमि अर्थात जापान में। इसका गठन भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1942 में किया गया। भारतीय राष्ट्रीय सेना मोहन सिंह के दिमाग की उपज थी, जिसे रासबिहारी बोस ने एक स्वरूप प्रदान किया।आज़ाद हिन्द फौज का गठन पहली बार राजा महेंद्र प्रताप सिंह द्वारा 29 अक्टूबर 1915 को अफगानिस्तान में हुआ था। मूल रूप से उस वक्त यह आजाद हिन्द सरकार की सेना थी, जिसका लक्ष्य अंग्रेजों से लड़कर भारत को स्वतंत्रता दिलाना था। जब दक्षिण-पूर्वी एशिया में जापान के सहयोग द्वारा नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने करीब 40,000 भारतीय स्त्री-पुरुषों की प्रशिक्षित सेना का गठन शुरू किया और उसे भी आजाद हिन्द फौज नाम दिया तो उन्हें आज़ाद हिन्द फौज का सर्वोच्च कमाण्डर नियुक्त करके उनके हाथों में इसकी कमान सौंप दी गई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सन 1943 में जापान की सहायता से टोकियो में रासबिहारी बोस ने भारत को अंग्रेजों के कब्जे से स्वतन्त्र कराने के लिये आजाद हिन्द फौज या इण्डियन नेशनल आर्मी (INA) नामक सशस्त्र सेना का संगठन किया। इस सेना के गठन में कैप्टन मोहन सिंह, रासबिहारी बोस एवं निरंजन सिंह गिल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना का विचार सर्वप्रथम मोहन सिंह के मन में आया था। इसी बीच विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग की स्थापना की गई, जिसका प्रथम सम्मेलन जून 1942 ई, को बैंकाक में हुआ।[5,6]

आरम्भ में इस फौज़ में जापान द्वारा युद्धबन्दी बना लिये गये भारतीय सैनिकों को लिया गया था। बाद में इसमें बर्मा और मलाया में स्थित भारतीय स्वयंसेवक भी भर्ती हो गये। आरंभ में इस सेना में लगभग 16,300 सैनिक थे। कालान्तर में जापान ने 60,000 युद्ध बंदियों को आज़ाद हिन्द फौज में शामिल होने के लिए छोड़ दिया पर इसके बाद ही जापानी सरकार और मोहन सिंह के अधीन भारतीय सैनिकों के बीच आज़ाद हिन्द फौज की भूमिका के संबध में विवाद उत्पन्न हो जाने के कारण मोहन सिंह एवं निरंजन सिंह गिल को गिरफ्तार कर लिया गया। आज़ाद हिन्द फौज का दूसरा चरण तब प्रारम्भ होता है, जब सुभाषचन्द्र बोस सिंगापुर गये। सुभाषचन्द्र बोस ने 1941 ई. में बर्लिन में इंडियन लीग की स्थापना की, किन्तु जर्मनी ने उन्हें रूस के विरुद्ध प्रयुक्त करने का प्रयास किया, तब उनके सामने कठिनाई उत्पन्न हो गई और उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया जाने का निश्चय किया।

एक वर्ष बाद सुभाष चन्द्र बोस पनडुब्बी द्वारा जर्मनी से जापानी नियंत्रण वाले सिंगापुर पहुँचे और पहुँचते ही जून 1943 में टोकियो रेडियो से घोषणा की कि अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे। हमें भारत के भीतर व बाहर से स्वतंत्रता के लिये स्वयं संघर्ष करना होगा। इससे प्रफुल्लित होकर रासबिहारी बोस ने 4 जुलाई 1943 को 46 वर्षीय सुभाष को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सौंप दिया।

5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमाण्डर के रूप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी ने सेना को सम्बोधित करते हुए दिल्ली चलो! का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर बर्मा सहित आज़ाद हिन्द फौज रंगून (यांगून) से होती हुई थलमार्ग से भारत की ओर बढ़ती हुई 18 मार्च सन 1944 ई. को कोहिमा और इम्फ़ाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों में पहुँच गई और ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से जमकर मोर्चा लिया। बोस ने अपने अनुयायियों को जय हिन्द का अमर नारा दिया और 21

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

अक्टूबर 1943 में सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना की। उनके अनुययी प्रेम से उन्हें नेताजी कहते थे।[7,8]

अपने इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सेनाध्यक्ष तीनों का पद नेताजी ने अकेले संभाला। इसके साथ ही अन्य जिम्मेदारियां जैसे वित्त विभाग एस.सी चटर्जी को, प्रचार विभाग एस.ए. अय्यर को तथा महिला संगठन लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया। उनके इस सरकार को जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड ने मान्यता दे दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। नेताजी उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। अंडमान का नया नाम शहीद द्वीप तथा निकोबार का स्वराज्य द्वीप रखा गया। 30 दिसम्बर 1943 को इन द्वीपों पर स्वतन्त्र भारत का ध्वज भी फहरा दिया गया। इसके बाद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर एवं रंगून में आज़ाद हिन्द फ़ौज का मुख्यालय बनाया। 4 फ़रवरी 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा भयंकर आक्रमण किया और कोहिमा, पलेल आदि कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम जारी एक प्रसारण में अपनी स्थिति स्पष्ट की और आज़ाद हिन्द फौज द्वारा लड़ी जा रही इस निर्णायक लड़ाई की जीत के लिये उनकी शुभकामनाएँ माँगीं:-मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हूँ कि यदि हमें आज़ादी चाहिये तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आज़ादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं। मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये किया है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिये किया है। भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है। आज़ाद हिन्द फौज के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्ट्रपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनायें चाहते हैं।सुभाषचन्द्र बोस द्वारा ही गांधी जी के लिए प्रथम बार राष्ट्रपिता शब्द का प्रयोग किया गया था।[7] इसके अतिरिक्त सुभाष चन्द्र बोस ने फ़ौज के कई बिग्रेड बना कर उन्हें नाम दिये:- महात्मा गाँधी ब्रिगेड, अबुल कलाम आज़ाद ब्रिगेड, जवाहरलाल नेहरू ब्रिगेड तथा सुभाषचन्द्र बोस ब्रिगेड। सुभाषचन्द्र बोस ब्रिगेड के सेनापति शाहनवाज ख़ाँ थे।21 मार्च 1944 को दिल्ली चलो के नारे के साथ आज़ाद हिंद फौज का हिन्दुस्तान की धरती पर आगमन हुआ।[9,10]22 सितम्बर 1944 को शहीदी दिवस मनाते हुये सुभाषचन्द्र बोस ने अपने सैनिकों से मार्मिक शब्दों में कहा -

हमारी मातृभूमि स्वतन्त्रता की खोज में है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। यह स्वतन्त्रता की देवी की माँग है।फ़रवरी से लेकर जून 1944 ई. के मध्य तक आज़ाद हिन्द फ़ौज की तीन ब्रिगेडों ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा से युद्ध लड़ा किन्तु दुर्भाग्यवश द्वितीय विश्व युद्ध का पासा पलट गया। जर्मनी ने हार मान ली और जापान को भी घुटने टेकने पड़े। ऐसे में नेताजी को टोकियो की ओर पलायन करना पड़ा और कहते हैं कि हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया किन्तु इस बात की पुष्टि अभी तक नहीं हो सकी है। आज़ाद हिन्द फौज के सैनिक एवं अधिकारियों को अंग्रेज़ों ने 1945 ई. में गिरफ़्तार कर लिया और उनका सैनिक अभियान असफल हो गया, किन्तु इस असफलता में भी उनकी जीत छिपी थी। आज़ाद हिन्द फ़ौज के गिरफ़्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज़ सरकार ने दिल्ली के लाल क़िला में नवम्बर, 1945 ई. को झूठा मुकदमा चलाया और फौज के मुख्य सेनानी कर्नल सहगल, कर्नल ढिल्लों एवं मेजर शाहवाज ख़ाँ पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया। इनके पक्ष में सर तेजबहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू, भूला भाई देसाई और के.एन. काटजू ने दलीलें दी लेकिन फिर भी इन तीनों की फाँसी की सज़ा सुनाई गयी। इस निर्णय के ख़िलाफ़ पूरे देश में कड़ी प्रतिक्रिया हुई, आम जनमानस भड़क उठे और और अपने दिल में जल रहे मशालों को हाथों में थाम कर उन्होंने इसका विरोध किया, नारे लगाये गये- लाल क़िले को तोड़ दो, आज़ाद हिन्द फ़ौज को छोड़ दो। विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्युदण्ड की सज़ा को माफ करा दिया।निस्सन्देह सुभाष उग्र राष्ट्रवादी थे। उनके मन में फासीवाद के अधिनायकों के सबल तरीकों के प्रति भावनात्मक झुकाव भी था और वे भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वतन्त्रता दिलाने हेतु हिंसात्मक उपायों में आस्था भी रखते थे। इसीलिये उन्होंने आजाद हिन्द फौज का गठन किया था।यद्यपि आज़ाद हिन्द फौज के सेनानियों की संख्या के बारे में थोड़े बहुत मतभेद रहे हैं परन्तु ज्यादातर इतिहासकारों का मानना है कि इस सेना में लगभग चालीस हजार सेनानी थे। इस संख्या का अनुमोदन ब्रिटिश गुप्तचर रहे कर्नल जीडी एण्डरसन ने भी किया है।जब जापानियों ने सिंगापुर पर कब्जा किया था तो लगभग 45 हजार भारतीय सेनानियों को पकड़ा गया था।[11,12]

परिणाम

मोहनसिंह की पहल पर एक जापानी अधिकारी के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया गया था. मोहन सिंह के हाथों में इसकी कमान दी गई थी. मगर नेतृत्व क्षमता में कुशलता की कमी तथा संगठन को सुचारू रूप से नही चला पाने के कारण कुछ ही समय में आजाद हिन्द फौज का संगठन मृतप्रायः हो गया.जब नेताजी साउथ एशिया में आए और संगठन की प्रगति के बारे में जाना तो उन्हें लगा कि अब फिर से आजाद हिन्द फौज को उठाकर भारत की आजादी का संग्राम लड़ना होगा. 4 जुलाई 1943 को

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के प्रवासी भारतीयों की बैठक बुलाई गई, सभी ने सर्वसम्मति से नेताजी को अपना नेता बनाया तथा सुभाष जी ने नेतृत्व अपने हाथ में लेकर संगठन को फिर से खड़ा किया.आज़ाद हिन्द फौज़ के गुमनाम शहीदों की याद में सिंगापुर के एस्प्लेनेड पार्क में आईएनए वार मेमोरियल बनाया गया था। आज़ाद हिन्द फौज के सुप्रीम कमाण्डर सुभाष चन्द्र बोस ने 8 जुलाई 1945 को इस स्मारक पर जाकर उन अनाम सैनिकों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी।[11] बाद में इस स्मारक को माउण्टबेटन के आदेश पर ब्रिटिश साम्राज्य की सेनाओं ने ध्वस्त करके सिंगापुर शहर पर कब्जा कर लिया था। इस स्मारक पर आज़ाद हिन्द फौज़ के तीन ध्येयवाचक शब्द - इत्तेहाद (एकता), एतमाद (विश्वास) और कुर्बानी (बलिदान) लिखे हुए थे।सन् 1995 में सिंगापुर की राष्ट्रीय धरोहर परिषद (नेशनल हैरिटेज बोर्ड) ने वहाँ निवास कर रहे भारतीय समुदाय के लोगों के आर्थिक सहयोग से इण्डियन नेशनल आर्मी की बेहद खूबसूरत स्मृति पट्टिका उसी ऐतिहासिक स्थल पर फिर से स्थापित कर दी। इसकी देखरेख का काम सिंगापुर की सरकार करती है।कदम कदम बढाये जा - आजाद हिन्द फौज का प्रयाण गीत (क्विक मार्च) था जिसकी रचना राम सिंह ठकुरि ने की थी। [13,14] इस ट्यून का आज भी भारतीय सेना के प्रयाण गीत के रूप में इसका प्रयोग होता है। पूरा गीत इस प्रकार है-

कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा ये जिंदगी है क़ौम की तू क़ौम पे लुटाये जा तू शेर-ए-हिन्द आगे बढ़ मरने से तू कभी न डर उड़ा के दुश्मनों का सर जोश-ए-वतन बढ़ाये जा	कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा ये जिंदगी है क़ौम की तू क़ौम पे लुटाये जा हिम्मत तेरी बढ़ती रहे खुदा तेरी सुनता रहे जो सामने तेरे खड़े तू खाक में मिलाये जा	कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा ये जिंदगी है क़ौम की तू क़ौम पे लुटाये जा चलो दिल्ली पुकार के ग़म-ए-निशाँ संभाल के लाल क़िले पे गाड़ के लहराये जा लहराये जा	कदम कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा ये जिंदगी है क़ौम की तू क़ौम पे लुटाये जा

निष्कर्ष

जनवरी 1938 को जब वे विदेश यात्रा पर थे तब उन्हें अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जो देश की ओर से किसी भारतीय को दिया जाने वाला उच्चतम पद था। उस समय वे मात्र 41 वर्ष के थे। कांग्रेस का नेतृत्व ग्रहण करने पर भारतीय इतिहास एवं सुभाष के जीवन में नया मोड़ आया।

भारत के महान सपूत महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को हुआ था। नेता जी आजीवन युद्धकर्म और संघर्ष तथा संगठन में रत रहे। सुभाष जब 15 वर्ष के थे उसी समय दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव स्वामी विवेकानंद और उनके गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस का पड़ा। सुभाष के जीवन पर अरविंद के गहन दर्शन एवं उनकी उच्च भावना का प्रभाव भी पड़ा। नेता जी ऋषि अरविंद की पत्रिका आर्य को बहुत ही लगाव से पढ़ते थे। पिताजी की इच्छा का निर्वाहन करते हुए उन्होंने उन दिनों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण परीक्षा आईसीएस में बैठने के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा आठ माह में परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। किंतु काफ ी विचार विमर्श के बाद उन्होनें आईसीएस की नौकरी का परित्याग करके एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया। तब तक किसी भारतीय ने आईसीएस के इतिहास में ऐसा नहीं किया था। सुभाष 16 जुलाई 1921 को बम्बई पहुंच गये और वहां पर महात्मा गांधी से उनके आवास पर मिले।[15]

युवक सुभाष तो सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर रहे थे वह उस नेता से मिलना चाहते थे जिसने सम्पूर्ण देश में अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन चला रखा था। गांधी जी ने सुभाष को कलकत्ता पहुंचकर देशबंधु चितरंजन दास से मिलने का सुझाव दिया। जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। उस समय देश में गांधी जी के नेतृत्व मे लहर थी तथा अंग्रेजी वस्त्रों का बहिष्कार, विधानसभा, अदालतों एवं शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार भी शामिल था।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

सुभाष ने इस युद्ध में कूदने का निश्चय किया और विरोध का नेतृत्व करने लगे। अंग्रेज अधिकारी आंदोलन के स्वरूप को देखकर घबरा गये। उन्होंने सुभाष को साथियों सहित 10 दिसंबर 1921 को संध्या समय गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया । एक वर्ष बाद उन्हें जेल से मुक्ति मिली। किन्तु जल्द ही क्रांतिकारी षड़यंत्र का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने सुभाष को मांडले जेल भेज दिया। दो वर्ष पश्चात सुभाष को मांडले से कलकत्ता लाया गया जहां उन्हें स्वस्थ्य के आधार पर मुक्त कर दिया गया। सुभाष ने कांग्रेस का प्रथम नेतृत्व 30 वर्ष की आयु में किया जब वे बंगाल प्रांतीय कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। [13,14]

जनवरी 1938 को जब वे विदेश यात्रा पर थे तब उन्हें अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जो देश की ओर से किसी भारतीय को दिया जाने वाला उच्चतम पद था। उस समय वे मात्र 41 वर्ष के थे। कांग्रेस का नेतृत्व ग्रहण करने पर भारतीय इतिहास एवं सुभाष के जीवन में नया मोड़ आया। गांधीजी ने सीतारमैया को अपना सहयोग दिया।

अत: गंाधीजी की इच्छा को ध्यान में रखते हुए अध्यक्ष पद से इस्तीफ ा देने के पश्चात् फ ारवर्ड ब्लाक नामक अग्रगामी दल की स्थापना की। हिंदू - मुस्लिम एकता की समस्या पर बैरिस्टर जिन्ना के साथ बातचीत करके वीर सावरकर के सदन पहुंच गये। सुभाष का वीर सावरकर के घर पहुंचना एक ऐतिहासिक घटना थी। अभिनव भारत में इस वृतांत का वर्णन किया है। जिसमें उन्होंने सुभाष को सशस्त्र संघर्ष के नेतृत्व की कमान को संभालने के विचार से अवगत कराया है। अत: सावरकर के विचारों को ध्यानपूर्वक ग्रहण करने के बाद दो मास की अनिवर्चनीय कठिनाइयों एवं गोनपीयता दुविधा और शारीरिक कष्टों को झेलते हुए विभिन्न रास्ते पार करते हुए 1941 में अप्रैल माह में मास्को होते हुए बर्लिन पहुंचे। नौ माह बाद जर्मनी रेडियो से उन्होंने भारतीयों को संबोधित किया तब यह रहस्य खुला कि वे भारत से काफ ी दूर पहुंच चुके हैं। उस समय भारत एवं जर्मनी के मध्य उच्चस्तरीय संम्बंध स्थापित हो चुके थे।

जर्मनी ने सुभाष को अंग्रेजों से लड़ने के लिये हर प्रकार की गतिविधियों को चलाने एवं उनकी सहायता करने की छूट दे दी थी। सुभाष बोस ने जर्मनी पहुंचते ही स्वातंत्रय योद्धाओं की परिषद के सहयोग एवं रास बिहारी बोस की अध्यक्षता से आजाद हिंद सरकार गठित की जिसे जापान, जर्मनी,फिलीपिंस, आइरिश रिपब्लिक मंचूरिया तथा इटली ने सहायता दी। अब भारत की मुक्ति के लिये सैनिक अभ्यास की तैयारी शुरू हो गयी। फरवरी 1944 में भारत और जापान ने संयुक्त अभियान बर्मा के जंगलों में प्रारम्भ कर दिया । [11,12]

अनेक दुर्गम और जोखिमपूर्ण पड़ावों को पार करते हुए आजाद हिंद फौज ने मार्च में भारतीय सीमा में प्रवेश कर लिया। किंतु उन्हें वापस लौटना पड़ा। नेताजी ने अथक परिश्रम करके सैनिक कार्यवाही की बारीकियों को समझा। अभियान की असफलता के पश्चात सैनिकों का मनाबेल बढ़ाने के लिये भारतीयों का विशेष ध्यान रखना पड़ता था। 15 अगस्त 1945 को अमेरिका द्वारा हिरोशिमा एवं नागासकी में परमाणु बम गिराये जाने के बाद जापान की पराजय का समाचार प्राप्त हुआ। अत: नेताजी एवं उनके मंत्रिमंडल में एकमत होकर यह निश्चय किया की अगले दिन प्रात: सिंगापुर, बैंकाक होते हुए रूस अधिकृत क्षेत्र मंचूरिया पहुंच गये। दिन में उन्होनें कर्नल स्ट्रेसी को को बुलाया और स्पष्ट निर्देश दिये कि वे सिंगापुर में समुद्र के किनारे आजाद हिंद फ ौज स्मारक का निर्माण शीघ्रता से प्रारम्भ करें। 16 अगस्त का प्रात:काल होने वाला था। नेताजी उठे और शीघ्रता से अपना कुछ निजी सामान और वस्त्रों को संभाला और उस यात्रा के लिये तैयार हुए जिसे वे अज्ञात लक्ष्य की ओर अभियान कह रहे थे। 17 अगस्त 1945 को प्रात: नेताजी बैंकांक हवाई अडडे के लिये लोगों से विदाई लेकर चले। 22 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो से हुए प्रसारण में फरमोसा द्वीप में हुई वायुयान दुर्घटना मे नेताजी की मृत्यु का समाचार सुनकर सम्पूर्ण विश्व स्तब्ध रह गया।[15]

संदर्भ

1) https://www.historynet.com/indian-national-army1942-45.htm

2) https://learn.culturalindia.net/indian-national-army.html

3) https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_National_Army

4) "Netaji Research Bureau". www.netaji.org. मूल से 21 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 मई 2019.
5) ↑ Fay 1993, पृष्ठ viii
6) ↑ Sarkar 1983, पृष्ठ 420
7) ↑ Fay 1993, पृष्ठ 228
8) ↑ "Subhas Chandra Bose in Nazi Germany". Sisir K. Majumdar. South Asia Forum Quarterly. 1997. पपृ॰ 10–14. मूल से 8 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2011-08-12.

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

9) ↑ "Total Mobilisation". National Archives of Singapore. मूल से 29 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2011-08-12.

10) ↑ क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006). स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास. 2 (1 संस्करण). नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ॰ 512. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7783-120-8. मूल से 14 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हूँ कि यदि हमें आज़ादी चाहिये तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आज़ादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं। मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये किया है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिये किया है। भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है। आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्ट्रपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनायें चाहते हैं।

11) ↑ Belle 2014, पृष्ठ 199

12) ↑ "Historical Journey of the Indian National Army". National Archives of Singapore. मूल से 16 मई 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-07-07.

13) ↑ Fay 1993, पृष्ठ 556

14) ↑ "INA War Memorial in Singapore". National Archives of Singapore (S1942.org.sg). मूल से 10 अप्रैल 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 अक्टूबर 2013.

15) ↑ "Heritage Sites and Trails in Singapore". National Heritage Board of Singapore. मूल से 28 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-07-07.